GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

ग्रामीण अंचल में लघु एवं कुटीर उद्योगों की वर्तमान स्थिति एवं चुनौतियाँ

(अयोध्या जनपद के विशेष संदर्भ में)

विनय शर्मा
शोध छात्र
प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विभाग
डॉ.राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय
अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत
ईमेल :vinaycdb@gmail.com

सार (Abstract)

ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था में परंपरागत व्यवसाय, लघु एवं कुटीर उद्योग सदियों से आजीविका, सामाजिक पहचान एवं सांस्कृतिक निरंतरता के महत्वपूर्ण स्तंभ रहे हैं। परंतु बदलते बाजार परिवेश, औद्योगीकरण, कच्चे माल की अनुपलब्धता एवं तकनीकी परिवर्तनों के कारण इन व्यवसायों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अयोध्या जनपद के ग्रामीण अंचल में संलग्न परंपरागत व्यवसायियों एवं लघु-कुटीर उद्यमियों की वर्तमान स्थिति एवं उनके समक्ष विद्यमान चुनौतियों का अध्ययन करना है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत जनपद के नौ ब्लॉकों से स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन द्वारा 210 व्यवसायियों/उद्यमियों का नमूना लिया गया, जिसमें हथकरघा-वस्त्र बुनाई, मिट्टी के बर्तन, लोहारी-बढ़ईगीरी, पीतल-धातु शिल्प, बांस-बेंत शिल्प एवं कृषि-आधारित लघु उद्योग से जुड़े व्यवसायी सम्मिलित थे। स्व-निर्मित एवं मानकीकृत 'व्यावसायिक चुनौती सूचकांक' के माध्यम से आंकड़े एकत्र किए गए तथा माध्य, मानक विचलन, t-परीक्षण एवं एकतरफा प्रसरण विश्लेषण (ANOVA) द्वारा विश्लेषित किए गए। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि व्यवसाय के प्रकार के आधार पर चुनौती सूचकांक में अत्यंत सार्थक अंतर पाया गया ($F = 23.49, p < .01$), जिसमें हथकरघा एवं वस्त्र बुनाई से जुड़े व्यवसायियों ने सर्वाधिक चुनौतियाँ अनुभव कीं। लिंग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया ($p > .05$), जबकि अनुभव के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया ($F = 17.86, p < .01$), जिसमें नवोदित व्यवसायियों ने अधिक चुनौतियाँ अनुभव कीं। अध्ययन परंपरागत व्यवसायों

के संरक्षण, बाजार उन्मुखीकरण एवं कौशल विकास हेतु लक्षित नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द: *परंपरागत व्यवसाय, लघु एवं कुटीर उद्योग, ग्रामीण अंचल, व्यावसायिक चुनौती, अयोध्या जनपद*

1. प्रस्तावना

भारत के ग्रामीण अंचल में परंपरागत व्यवसाय, लघु एवं कुटीर उद्योग न केवल आजीविका का साधन रहे हैं, अपितु स्थानीय सांस्कृतिक विरासत, हस्तशिल्प कौशल एवं सामाजिक संरचना के भी महत्वपूर्ण वाहक रहे हैं। हथकरघा, कुम्हारी कला, लोहारी, बढ़ईगीरी, पीतल एवं धातु शिल्प, बांस-बेंत शिल्प जैसे व्यवसाय पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होते हुए ग्रामीण अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग बने रहे हैं।

किंतु विगत कुछ दशकों में वैश्वीकरण, औद्योगिक उत्पादों की सुलभता, बाजार प्रतिस्पर्धा एवं आधुनिक तकनीक के प्रसार के कारण इन परंपरागत व्यवसायों के समक्ष अस्तित्व की चुनौती उत्पन्न हुई है। वित्तीय संसाधनों की कमी, कच्चे माल की अनुपलब्धता, संगठित बाजार तक पहुँच का अभाव तथा युवा पीढ़ी की घटती रुचि जैसे कारकों ने इन उद्योगों की सततता को प्रभावित किया है। साथ ही, केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं (जैसे मुद्रा योजना, विश्वकर्मा योजना, ओडीओपी) के माध्यम से इन व्यवसायों के पुनरुद्धार एवं सुदृढ़ीकरण के प्रयास भी किए जा रहे हैं।

अयोध्या जनपद, अपनी सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्ता के साथ-साथ विविध ग्रामीण आर्थिक गतिविधियों का केंद्र भी है। यहाँ के ग्रामीण अंचलों में आज भी अनेक परिवार परंपरागत व्यवसायों में संलग्न हैं। प्रस्तुत अध्ययन इसी संदर्भ में अयोध्या जनपद के ग्रामीण अंचल में संलग्न परंपरागत व्यवसायियों एवं लघु-कुटीर उद्यमियों की वर्तमान स्थिति एवं उनके समक्ष विद्यमान चुनौतियों का साक्ष्य-आधारित विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

2. संबंधित साहित्य की समीक्षा

ग्रामीण लघु एवं कुटीर उद्योगों पर उपलब्ध अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि इन व्यवसायों की सततता मुख्यतः वित्तीय पहुँच, कच्चे माल की उपलब्धता एवं बाजार संपर्क पर निर्भर करती है। अनेक अध्ययनों ने यह भी रेखांकित किया है कि संगठित औद्योगिक क्षेत्र की तुलना में असंगठित ग्रामीण उद्योगों को साख सुविधा एवं तकनीकी सहायता अपेक्षाकृत कम प्राप्त होती है, जिसके कारण उत्पादन क्षमता एवं गुणवत्ता प्रभावित होती है। हस्तशिल्प एवं हथकरघा क्षेत्र से संबंधित अध्ययनों में पाया गया है कि यद्यपि इस क्षेत्र में रोजगार सृजन की व्यापक संभावना विद्यमान है, तथापि मध्यस्थों की भूमिका, उचित मूल्य न मिलना तथा प्रत्यक्ष बाजार संपर्क का अभाव कारीगरों की आय को सीमित करता है। इसी प्रकार, कुम्हारी, लोहारी एवं बढ़ईगीरी जैसे व्यवसायों में यंत्रीकृत एवं औद्योगिक विकल्पों की उपलब्धता के कारण मांग में निरंतर कमी दर्ज की गई है। अनुभव के संदर्भ में साहित्य बताता है कि नवोदित उद्यमी बाजार संपर्क एवं साख सुविधा के अभाव में अधिक चुनौतियाँ अनुभव करते हैं, जबकि अनुभवी व्यवसायी स्थापित नेटवर्क के कारण अपेक्षाकृत स्थिर स्थिति में होते हैं। लिंग के आधार पर भिन्नता संबंधी साक्ष्य सामान्यतः मिश्रित एवं सांख्यिकीय रूप से कमजोर पाए गए हैं। प्रस्तुत अध्ययन इसी आधार पर अयोध्या जनपद के विशिष्ट संदर्भ में अनुभवजन्य साक्ष्य प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

3. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

यद्यपि केंद्र एवं राज्य स्तर पर परंपरागत व्यवसायों एवं कुटीर उद्योगों के संवर्धन हेतु अनेक योजनाएं संचालित हैं, तथापि जनपद-स्तरीय अनुभवजन्य साक्ष्य की उपलब्धता सीमित है। अयोध्या जनपद, अपनी सांस्कृतिक विशिष्टता एवं बढ़ते पर्यटन महत्व के साथ, परंपरागत हस्तशिल्प एवं कुटीर उद्योगों के संवर्धन हेतु विशेष अवसर प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत अध्ययन जिला प्रशासन, ग्रामीण विकास अभिकरणों, खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड तथा स्वयं सहायता समूहों को व्यवसाय-विशिष्ट एवं अनुभव-संवेदनशील हस्तक्षेप रणनीति तैयार करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

4. समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन की समस्या इस प्रकार कथित है: "ग्रामीण अंचल में लघु एवं कुटीर उद्योगों की वर्तमान स्थिति एवं चुनौतियाँ: अयोध्या जनपद के विशेष संदर्भ में।"

5. संक्रियात्मक परिभाषाएँ

- परंपरागत व्यवसाय: पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होने वाले पारंपरिक हस्तशिल्प एवं उत्पादन-आधारित व्यवसाय, यथा हथकरघा, कुम्हारी कला, लोहारी, बढ़ईगीरी, पीतल-धातु शिल्प एवं बांस-बेंत शिल्प।
- लघु एवं कुटीर उद्योग: सीमित पूंजी एवं पारिवारिक/स्थानीय श्रम पर आधारित छोटे स्तर के उत्पादन उद्यम, जिनमें कृषि-आधारित प्रसंस्करण उद्योग भी सम्मिलित हैं।
- व्यावसायिक चुनौती सूचकांक: व्यवसायी/उद्यमी द्वारा वित्त, बाजार, कच्चा माल, तकनीक एवं कौशल संबंधी अनुभूत चुनौतियों के आधार पर प्राप्त 100-बिंदु संयुक्त सूचकांक।

6. अध्ययन के उद्देश्य

- अयोध्या जनपद के ग्रामीण अंचल में परंपरागत व्यवसायियों/उद्यमियों की वर्तमान स्थिति एवं चुनौतियों का अध्ययन करना।
- व्यवसाय के प्रकार के आधार पर व्यावसायिक चुनौती सूचकांक की तुलना करना।
- पुरुष एवं महिला व्यवसायियों के व्यावसायिक चुनौती सूचकांक की तुलना करना।
- व्यावसायिक अनुभव के आधार पर चुनौती सूचकांक पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर परंपरागत व्यवसायों के संवर्धन हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

7. अध्ययन की परिकल्पनाएँ

अध्ययन हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ (H0) निर्मित की गईं:

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

- H01: व्यवसाय के प्रकार के आधार पर व्यावसायिक चुनौती सूचकांक के माध्य मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- H02: पुरुष एवं महिला व्यवसायियों के व्यावसायिक चुनौती सूचकांक के माध्य मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- H03: विभिन्न अनुभव समूहों के व्यावसायिक चुनौती सूचकांक के माध्य मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

8. अध्ययन की सीमाएँ

- प्रस्तुत अध्ययन अयोध्या जनपद के नौ ग्रामीण ब्लॉकों में संलग्न परंपरागत व्यवसायियों एवं लघु-कुटीर उद्यमियों तक सीमित है।
- अध्ययन 210 व्यवसायियों/उद्यमियों के नमूने तक सीमित है।
- अध्ययन व्यावसायिक चुनौती सूचकांक के अनुभूत आयामों तक सीमित है; वास्तविक उत्पादन/बिक्री आंकड़े इसके दायरे से बाहर हैं।

9. शोध विधि

9.1 शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया, जो विस्तृत एवं स्तरीकृत नमूने में व्यवसायियों की वर्तमान स्थिति का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करने हेतु उपयुक्त है।

9.2 समष्टि एवं न्यादर्श

समष्टि में अयोध्या जनपद के ग्रामीण अंचल में संलग्न समस्त परंपरागत व्यवसायी एवं लघु-कुटीर उद्यमी सम्मिलित थे। स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा जनपद के नौ ब्लॉकों से 210 व्यवसायियों का न्यादर्श चयनित किया गया, जिसका विवरण तालिका 1 में प्रस्तुत है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

ब्लॉक	व्यवसायियों की संख्या	प्रतिशत	क्रम
रुदौली	30	14.3%	1
मिल्कीपुर	28	13.3%	2
सोहावल	26	12.4%	3
बीकापुर	26	12.4%	3
मसौधा	24	11.4%	5
पूरा बाज़ार	22	10.5%	6
अमानीगंज	20	9.5%	7
हैदरगढ़	18	8.6%	8
तरुण	16	7.6%	9
कुल	**210**	**100%**	—

तालिका 1: ब्लॉक-वार न्यादर्श वितरण (N = 210)

9.3 प्रयुक्त उपकरण

आंकड़ा संकलन हेतु स्व-निर्मित एवं मानकीकृत 'व्यावसायिक चुनौती सूचकांक' का प्रयोग किया गया। इस सूचकांक में वित्तीय सीमाएं, बाजार तक पहुँच, कच्चे माल की उपलब्धता, तकनीकी एवं कौशल संबंधी कारक तथा पीढ़ीगत रुचि जैसे पाँच आयामों से संबंधित 35 कथन पाँच-बिंदु लिकर्ट प्रारूप में सम्मिलित किए गए।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

विशेषज्ञ मत एवं पूर्व-परीक्षण (Cronbach's alpha = 0.84) द्वारा उपकरण की वैधता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित की गई तथा कच्चे प्राप्तांकों को 100-बिंदु संयुक्त सूचकांक में परिवर्तित किया गया।

9.4 आंकड़ा संकलन प्रक्रिया

संबंधित ब्लॉकों में ग्राम प्रधान, खादी एवं ग्रामोद्योग कार्यालय तथा स्थानीय स्वयं सहायता समूहों के सहयोग से व्यवसायियों से संपर्क स्थापित कर आंकड़े संकलित किए गए। प्रत्येक प्रतिभागी को अध्ययन के उद्देश्य से अवगत कराते हुए सहमति प्राप्त की गई।

9.5 प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

समस्त चरों हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी (माध्य, मानक विचलन) की गणना की गई। H02 की जाँच हेतु स्वतंत्र-न्यादर्श t-परीक्षण तथा H01 एवं H03 की जाँच हेतु एकतरफा प्रसरण विश्लेषण (ANOVA) प्रयुक्त किया गया। समस्त परीक्षणों हेतु सार्थकता का स्तर 0.05 रखा गया।

10. आंकड़ा विश्लेषण एवं व्याख्या

10.1 समग्र न्यादर्श प्रोफाइल

चित्र 3 अध्ययन में सम्मिलित 210 व्यवसायियों/उद्यमियों के ब्लॉक-वार वितरण को दर्शाता है, जो जनपद के समस्त नौ ब्लॉकों में आनुपातिक प्रतिनिधित्व की पुष्टि करता है।

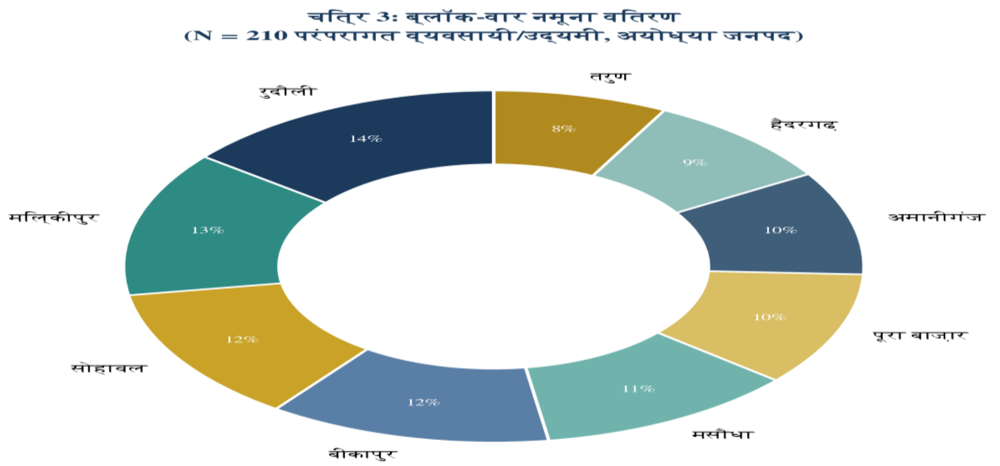

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

चित्र 3: ब्लॉक-वार न्यादर्श वितरण (N = 210)

10.2 परिकल्पना H01 का परीक्षण (व्यवसाय का प्रकार)

H01 में कथित था कि व्यवसाय के प्रकार के आधार पर व्यावसायिक चुनौती सूचकांक में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तालिका 2 एवं तालिका 3 में संबंधित वर्णनात्मक एवं अनुमानिक सांख्यिकी प्रस्तुत है।

व्यवसाय का प्रकार	N	माध्य	मा.वि.	क्रम
हथकरघा एवं वस्त्र बुनाई	53	72.91	8.01	1
मिट्टी के बर्तन (कुम्हारी कला)	33	69.12	6.27	2
बांस एवं बेंत शिल्प	24	68.42	9.60	3
पीतल एवं धातु शिल्प	34	64.50	10.18	4
लोहारी एवं बढ़ईगीरी	31	61.26	8.83	5
कृषि-आधारित लघु उद्योग	35	53.75	8.84	6

तालिका 2: व्यवसाय-प्रकार अनुसार वर्णनात्मक सांख्यिकी (N = 210)

विचरण स्रोत	df	F-मूल्य	p-मूल्य	परिणाम
समूहों के मध्य	5, 204	23.49	< .001	सार्थक

तालिका 3: व्यवसाय-प्रकार हेतु एकतरफा ANOVA सारांश (p < .01)

प्राप्त F-मूल्य 23.49, 0.01 स्तर पर सार्थक है (p < .001)। अतः H01 अस्वीकृत की जाती है। हथकरघा एवं वस्त्र बुनाई से जुड़े व्यवसायियों ने सर्वाधिक चुनौती सूचकांक (M = 72.91) दर्शाया, इसके पश्चात मिट्टी

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

के बर्तन (M = 69.12) एवं बांस-बेंत शिल्प (M = 68.42) का स्थान रहा, जबकि कृषि-आधारित लघु उद्योग से जुड़े व्यवसायियों ने सबसे कम चुनौती सूचकांक (M = 53.75) दर्शाया। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि पारंपरिक हस्तशिल्प-आधारित व्यवसाय, कृषि-आधारित प्रसंस्करण उद्योगों की तुलना में बाजार एवं कच्चे माल संबंधी अधिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

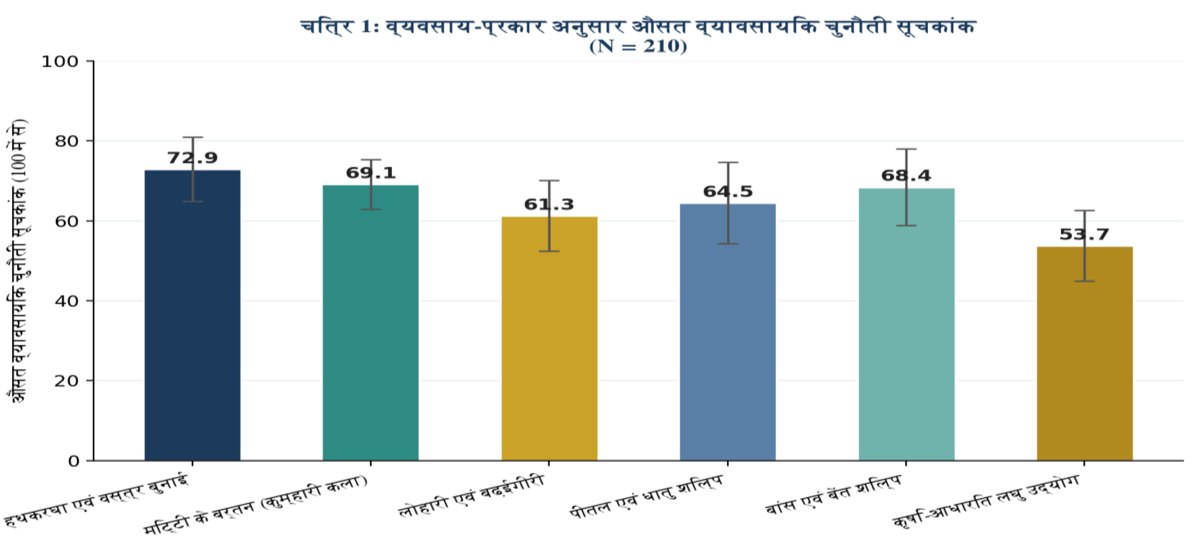

चित्र 1: व्यवसाय-प्रकार अनुसार औसत व्यावसायिक चुनौती सूचकांक

10.3 परिकल्पना H02 का परीक्षण (लिंग)

H02 में कथित था कि पुरुष एवं महिला व्यवसायियों के व्यावसायिक चुनौती सूचकांक में कोई सार्थक अंतर नहीं है। पुरुष व्यवसायियों (N = 123, M = 64.52, S.D. = 11.57) एवं महिला व्यवसायियों (N = 87, M = 66.95, S.D. = 9.46) के मध्य प्राप्त t-मूल्य -1.66 रहा, जो 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है (df = 208, p = .098)। अतः H02 स्वीकृत की जाती है। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि अयोध्या जनपद के ग्रामीण अंचल में परंपरागत व्यवसायों की चुनौतियाँ लिंग-निरपेक्ष प्रकृति की हैं, तथा व्यवसाय का प्रकार एवं अनुभव, लिंग की तुलना में अधिक निर्णायक कारक सिद्ध होते हैं।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

10.4 परिकल्पना H03 का परीक्षण (व्यावसायिक अनुभव)

H03 में कथित था कि विभिन्न अनुभव समूहों के व्यावसायिक चुनौती सूचकांक में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तालिका 4 में संबंधित वर्णनात्मक सांख्यिकी प्रस्तुत है।

अनुभव समूह	N	माध्य	मा.वि.	क्रम
0-5 वर्ष	72	69.91	10.29	1
6-15 वर्ष	80	66.06	10.15	2
15 वर्ष से अधिक	58	59.35	9.36	3

तालिका 4: अनुभव-वार वर्णनात्मक सांख्यिकी (N = 210)

विचरण स्रोत	df	F-मूल्य	p-मूल्य	परिणाम
समूहों के मध्य	2, 207	17.86	< .001	सार्थक

तालिका 5: अनुभव-समूह हेतु एकतरफा ANOVA सारांश (p < .01)

प्राप्त F-मूल्य 17.86, 0.01 स्तर पर सार्थक है ($p < .001$)। अतः H03 अस्वीकृत की जाती है। 0-5 वर्ष के अनुभव वाले नवोदित व्यवसायियों ने सर्वाधिक चुनौती सूचकांक ($M = 69.91$) दर्शाया, जबकि 15 वर्ष से अधिक अनुभव वाले व्यवसायियों ने सबसे कम चुनौती सूचकांक ($M = 59.35$) दर्शाया। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि अनुभव में वृद्धि के साथ व्यवसायी बाजार संपर्क, ग्राहक आधार एवं संसाधन प्रबंधन में अधिक दक्ष होते जाते हैं, जिससे अनुभूत चुनौतियाँ क्रमशः कम होती जाती हैं।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

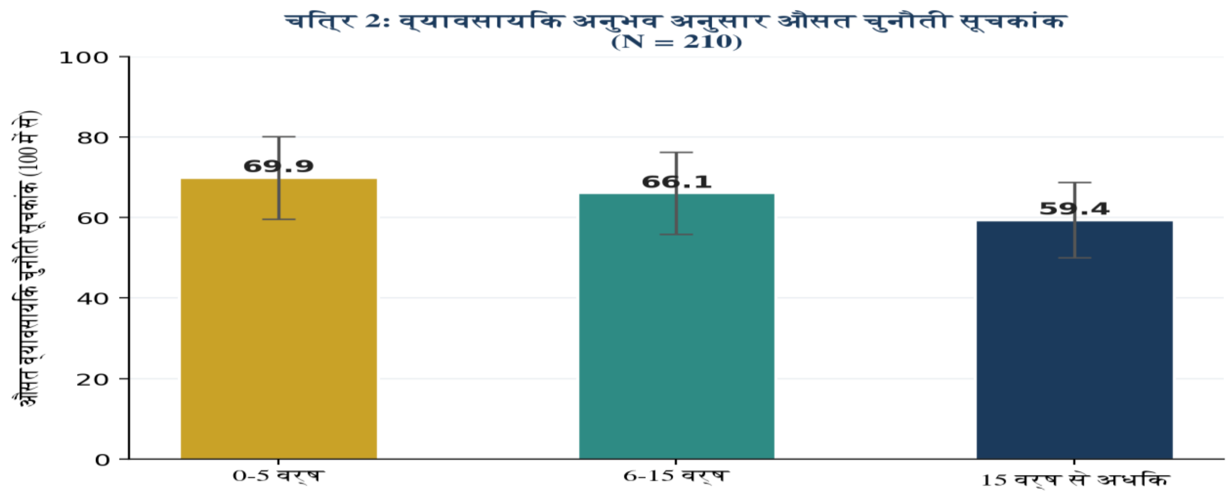

चित्र 2: व्यावसायिक अनुभव अनुसार औसत चुनौती सूचकांक

10.5 अध्ययन का संकल्पनात्मक ढांचा

चित्र 4 अध्ययन के अंतर्निहित संकल्पनात्मक ढांचे को प्रस्तुत करता है, जिसमें ग्रामीण परंपरागत व्यवसायों एवं लघु-कुटीर उद्योगों की वर्तमान स्थिति, बाजार-वित्त-तकनीकी परिवेश में परिवर्तन के साथ अंतःक्रिया करते हुए, पाँच प्रमुख आयामों के माध्यम से व्यवसायियों की अनुभूत चुनौतियों को आकार देती है।

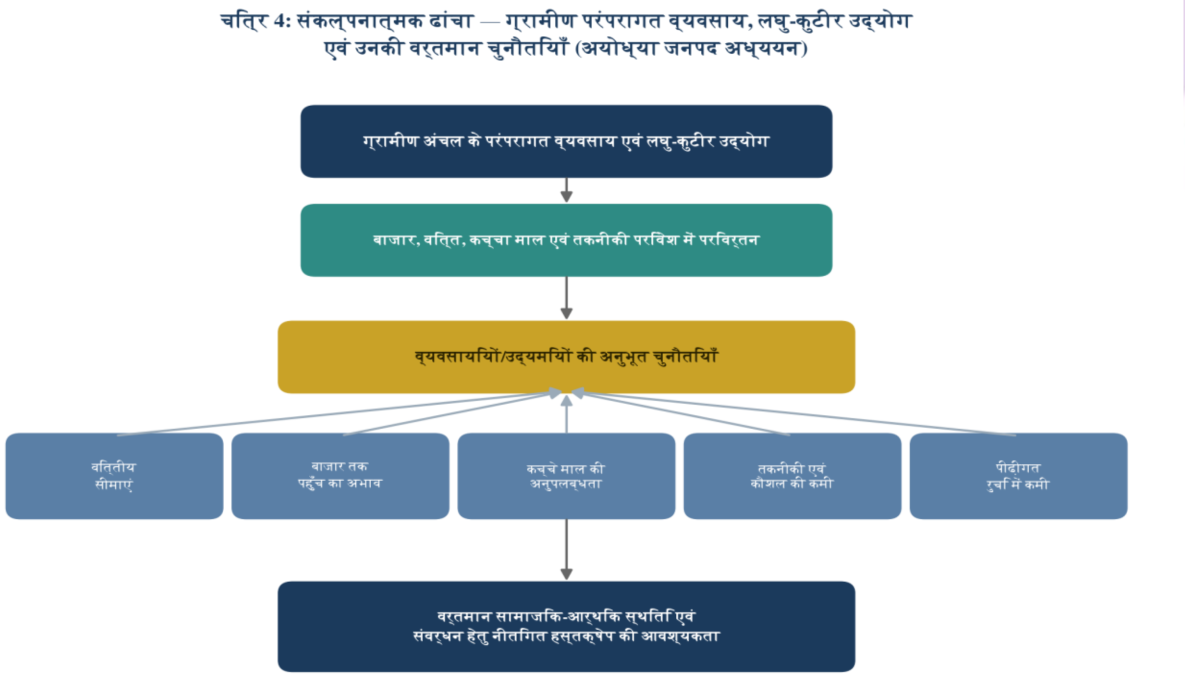

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

चित्र 4: संकल्पनात्मक ढांचा — ग्रामीण परंपरागत व्यवसाय, लघु-कुटीर उद्योग एवं वर्तमान चुनौतियाँ

11. प्रमुख निष्कर्ष

- व्यवसाय के प्रकार के आधार पर चुनौती सूचकांक में अत्यंत सार्थक अंतर पाया गया, $F(5, 204) = 23.49$, $p < .01$, जिसमें हथकरघा एवं वस्त्र बुनाई से जुड़े व्यवसायियों ने सर्वाधिक तथा कृषि-आधारित लघु उद्योग से जुड़े व्यवसायियों ने न्यूनतम चुनौतियाँ अनुभव कीं।
- पुरुष ($M = 64.52$) एवं महिला ($M = 66.95$) व्यवसायियों के चुनौती सूचकांक में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, $t(208) = -1.66$, $p > .05$।
- व्यावसायिक अनुभव के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया, $F(2, 207) = 17.86$, $p < .01$, जिसमें अनुभव में वृद्धि के साथ चुनौती सूचकांक में क्रमिक कमी दर्ज हुई।
- रुदौली एवं मिल्कीपुर ब्लॉक, जहाँ हथकरघा एवं वस्त्र बुनाई की सघनता अधिक है, तुलनात्मक रूप से उच्च चुनौती स्तर प्रदर्शित करते हैं, जो लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता को इंगित करता है।
- नवोदित व्यवसायियों (0-5 वर्ष) में बाजार संपर्क एवं वित्तीय पहुँच संबंधी चुनौतियाँ सर्वाधिक पाई गईं, जो प्रारंभिक चरण में संस्थागत सहयोग की आवश्यकता दर्शाती हैं।

12. व्यावहारिक निहितार्थ

प्रस्तुत निष्कर्ष नीति-निर्माण एवं क्रियान्वयन हेतु अनेक व्यावहारिक निहितार्थ प्रस्तुत करते हैं। प्रथमतः, हथकरघा एवं वस्त्र बुनाई जैसे उच्च-चुनौती वाले व्यवसायों हेतु विशिष्ट, लक्षित हस्तक्षेप कार्यक्रम आवश्यक हैं, जिसमें प्रत्यक्ष बाजार संपर्क एवं मध्यस्थ-मुक्त विपणन व्यवस्था को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। द्वितीयतः, चूँकि नवोदित व्यवसायी अधिक चुनौतियाँ अनुभव करते हैं, अतः प्रारंभिक तीन-पाँच वर्षों हेतु विशेष मार्गदर्शन (मेंटरशिप), साख सुविधा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए। तृतीयतः, चूँकि लिंग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अतः योजनाओं का लाभ लिंग-निरपेक्ष रूप से, किंतु व्यवसाय-प्रकार एवं अनुभव के

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

आधार पर विभेदित रूप से प्रदान किया जाना चाहिए। अंततः, रुदौली एवं मिल्कीपुर जैसे उच्च-चुनौती ब्लॉकों में खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड, बैंकिंग संस्थाओं एवं स्वयं सहायता समूहों के समन्वय से विशेष शिविर आयोजित किए जाने चाहिए।

13. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अयोध्या जनपद के ग्रामीण अंचल में परंपरागत व्यवसायों, लघु एवं कुटीर उद्योगों की वर्तमान स्थिति एवं चुनौतियों का अनुभवजन्य विश्लेषण प्रस्तुत करना था। निष्कर्ष स्पष्ट करते हैं कि व्यवसाय का प्रकार एवं व्यावसायिक अनुभव, चुनौती सूचकांक के सार्थक निर्धारक हैं, जबकि लिंग एक निर्णायक कारक के रूप में सामने नहीं आया। हथकरघा एवं वस्त्र बुनाई जैसे परंपरागत हस्तशिल्प-आधारित व्यवसाय सर्वाधिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, जिन्हें तत्काल एवं लक्षित नीतिगत ध्यान की आवश्यकता है। जैसे-जैसे अयोध्या जनपद सांस्कृतिक पर्यटन के एक प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है, वैसे-वैसे परंपरागत व्यवसायों को इस अवसर से जोड़कर उनके संरक्षण, संवर्धन एवं सतत आजीविका सृजन को सुनिश्चित करना समय की मांग है।

संदर्भ सूची (References)

भारत सरकार। (2020)। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय — वार्षिक प्रतिवेदन। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार।

खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग। (2022)। ग्रामोद्योग विकास योजना — दिशानिर्देश। खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय।

भारतीय रिज़र्व बैंक। (2021)। सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों हेतु साख उपलब्धता पर विशेष अध्ययन प्रतिवेदन। भारतीय रिज़र्व बैंक।

Banerjee, A., & Duflo, E. (2019). Good economics for hard times. Public Affairs.

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

Kumar, R., & Singh, P. (2021). Rural cottage industries in Uttar Pradesh: Status and prospects. Indian Journal of Rural Development, 40(2), 112–124.

Pratham। (2023)। ग्रामीण आर्थिक स्थिति वार्षिक प्रतिवेदन 2022। ASER Centre।

नियोजन आयोग, उत्तर प्रदेश सरकार। (2023)। अयोध्या जनपद वार्षिक योजना प्रतिवेदन। नियोजन विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार।

Sharma, K. (2020). Handloom weaving and rural livelihoods: Challenges and opportunities in North India. Journal of Rural Studies, 78, 45–56.

विश्व बैंक। (2022)। ग्रामीण गैर-कृषि रोजगार एवं आजीविका — दक्षिण एशिया प्रतिवेदन। World Bank Group।